

दि कर्मािक पोस्ट

Global
School Of
Excellence,
Obedullaganj

Email- thekaarmicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 3

(प्रति बुधवार),

इन्दौर, 14 जनवरी 2026 से 20 जनवरी 2026

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

सूर्य के ऊपरी वातावरण में अत्यधिक ऊर्जावान कणों की नई खोज

न्यूयार्क (एजेंसी)। वैज्ञानिकों ने सूर्य के ऊपरी वातावरण, जिसे कोरोना कहा जाता है, में अत्यधिक ऊर्जावान कणों का एक नया प्रकार खोजा है। यह खोज सूर्य के सबसे शक्तिशाली विस्फोटों, यानी सोलर फ्लेयर्स, के दौरान निकलने वाली रहस्यमय गामा किरणों को समझने में मदद करती है। यह शोध नेचर एस्ट्रोनॉमी पत्रिका में प्रकाशित हुआ है और इसे न्यू जर्सी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एनजेआईटी) के सेंटर फॉर सोलर-टेरेस्ट्रियल रिसर्च के वैज्ञानिकों ने किया है।

कई सालों से वैज्ञानिक जानते थे कि जब सूर्य पर बहुत बड़ा सोलर फ्लेयर होता है, तो उससे बहुत शक्तिशाली गामा किरणें निकलती हैं। लेकिन यह साफ नहीं था कि ये किरणें ठीक कैसे और कहाँ बनती हैं। अब इस नई खोज से यह पहली काफी हद तक सुलझ गई है। शोधकर्ताओं ने सूर्य के कोरोना में कणों का एक ऐसा समूह पहचाना है जो सामान्य सोलर फ्लेयर कणों से बिल्कुल अलग है। ये कण लाखों इलेक्ट्रॉन वोल्ट (एमईवी) तक की ऊर्जा रखते हैं और लगभग प्रकाश की गति से चलते हैं। आमतौर पर सोलर फ्लेयर्स में कम ऊर्जा वाले कण ज्यादा और ज्यादा ऊर्जा वाले कण कम होते हैं, लेकिन इस नए समूह में अधिकतर कण बहुत ज्यादा ऊर्जा वाले हैं और कम ऊर्जा वाले कण बहुत कम हैं। यही बात इन्हें खास बनाती है। यह खोज 10 सितंबर 2017 को हुए एक बेहद शक्तिशाली एक्स 8.2 श्रेणी के सोलर फ्लेयर के अध्ययन से हुई। वैज्ञानिकों ने दो अलग-अलग उपकरणों से मिले आंकड़ों को एक साथ विश्लेषण किया। पहला था नासा का फर्मी गामा-रे स्पेस टेलीस्कोप, जिसने गामा किरणों को मापा। दूसरा था एक्सपेंडेड ओवेन्स वैली सोलर एरे (ईओवीएसए), जो कैलिफोर्निया में स्थित एक रेडियो टेलीस्कोप है और माइक्रोवेव तरंगों के जरिए ऊर्जावान कणों की गतिविधि दिखाता है। जब दोनों उपकरणों के आंकड़ों को मिलाया गया, तो वैज्ञानिकों को सूर्य के कोरोना में एक छोटा सा क्षेत्र मिला, जिसे उन्होंने रीजन ऑफ इंटरैस्ट 3 या आरओआई-3 कहा। इस क्षेत्र में गामा किरणें और माइक्रोवेव संकेत एक ही जगह से आ रहे थे। इससे यह साफ हो गया कि वहीं पर अत्यधिक ऊर्जावान कण मौजूद हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, ये ऊर्जावान कण गामा किरणें ब्रेम्सस्ट्रालुंग नाम की प्रक्रिया से बनाते हैं। इस

प्रक्रिया में जब बहुत तेज गति से चलने वाले हल्के आवेशित कण, जैसे इलेक्ट्रॉन, सूर्य के घने प्लाज्मा से टकराते हैं, तो वे बहुत उच्च ऊर्जा की किरणें छोड़ते हैं। यही गामा किरणें होती हैं। शोध में यह भी दिखाया गया कि इन कणों की ऊर्जा का वितरण सीधे तौर पर देखे गए गामा-रे स्पेक्ट्रम से मेल खाता है। इससे यह पुष्टि हुई कि गामा किरणों का असली स्रोत यही नया कण समूह है।

क्यों अहम है यह खोज ?

यह खोज सोलर फ्लेयर भौतिकी को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सूर्य अपने चुंबकीय क्षेत्र में जमा ऊर्जा को अचानक छोड़कर कणों को बहुत अधिक ऊर्जा तक पहुंचा सकता है। यह जानकारी भविष्य में सोलर गतिविधि के बेहतर मॉडल बनाने में सहायक होगी। बेहतर मॉडल का मतलब है अंतरिक्ष के मौसम की बेहतर भविष्यवाणी। सोलर फ्लेयर्स और उनसे निकलने वाली ऊर्जा पृथ्वी पर उपग्रहों, संचार प्रणालियों, जीपीएस और बिजली ग्रिड को प्रभावित कर सकती है। इसलिए सूर्य के व्यवहार को समझना हमारे रोजमर्रा के जीवन के लिए भी जरूरी है। अब भी कुछ सवाल बाकी हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि ये कण



इलेक्ट्रॉन हैं या पॉजिट्रॉन। वैज्ञानिकों का मानना है कि माइक्रोवेव उत्सर्जन की ध्रुवण (पोलराइजेशन) मापकर इसका जवाब मिल सकता है। जल्द ही ईओवीएसए को ईओवीएसए-15 में अपग्रेड किया जाएगा, जिसमें नए एंटीना और बेहतर तकनीक जोड़ी जाएगी। इससे वैज्ञानिकों को और भी सटीक आंकड़े मिलेंगे और वे इन रहस्यमय कणों के बारे में ज्यादा स्पष्ट जानकारी हासिल कर सकेंगे। सूर्य के कोरोना में अत्यधिक ऊर्जावान कणों की यह नई खोज सोलर विज्ञान में एक बड़ा कदम है। इसने वर्षों पुराने सवालों के जवाब दिए हैं और भविष्य के शोध के लिए नए रास्ते खोले हैं। साथ ही, यह हमें सूर्य की ताकत और उसके पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है।

पर्यावरण और जल संरक्षण के लिए भी मिलेगा विवेकानंद यूथ अवार्ड, सीएम योगी का बड़ा एलान

लखनऊ। स्वामी विवेकानंद की जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर सोमवार को आयोजित राज्य स्तरीय युवा महोत्सव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवेकानंद यूथ अवार्ड को लेकर बड़ा एलान किया। उन्होंने कहा कि अब यह पुरस्कार केवल खेल और सामाजिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले युवक मंगल दल और महिला मंगल दल को भी दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने राज्य स्तर पर विवेकानंद युवा पुरस्कार भी वितरित किए। इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत 21 करोड़ रुपये की लागत से पांच मल्टीपर्वज हाल का लोकार्पण किया। इनमें लखनऊ में दो, हरदोई, कन्नौज व सहारनपुर में एक-एक हाल बनाए गए हैं। 26 करोड़ रुपये की लागत वाले तीन ग्रामीण स्टेडियम का शिलान्यास भी किया। यह स्टेडियम सुलतानपुर, कासगंज व फतेहपुर में बनाए जाएंगे। बड़ी संख्या में आए युवक व महिला मंगल दलों को संबोधित करते हुए कहा कि जल संरक्षण और पर्यावरण संतुलन आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रदेश के प्रत्येक गांव में चेकडैम, अमृत सरोवर, पुराने कुओं के पुनरुद्धार और अतिक्रमण से मुक्त कराई गई प्राचीन नदियों के संरक्षण में युवाओं की भागीदारी निर्णायक होगी। इसी आधार पर भविष्य में राज्य स्तरीय विवेकानंद यूथ अवार्ड प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान को जन आंदोलन बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि प्रत्येक परिवार अपनी सदस्य संख्या के अनुसार पौधारोपण करे। आगामी वन महोत्सव के दौरान प्रदेश में 35 करोड़ पौधे लगाए जाएंगे, जिसमें युवक व महिला मंगल दलों की भूमिका अहम होगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि गांव स्तर पर खेल मैदान, विकासखंड में मिनी स्टेडियम और जिलों में बड़े स्टेडियम निर्माण के साथ युवाओं को नशामुक्ति, टीमवर्क और सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ा जाएगा।

साल बोरर की वापसी, बारिश और आर्द्रता ने तैयार की पृष्ठभूमि



डिंडोरी वैज्ञानिकों का मानना है कि इस वर्ष साल बोरर के पनपने की बड़ी वजह अधिक बारिश, अनुकूल तापमान और नमी हो सकती है। राज्य वन अनुसंधान संस्थान (एसएफआरआई) के वरिष्ठ शोध अधिकारी व वैज्ञानिक उदय होमकर के अनुसार, इस वर्ष हम देख रहे हैं कि बारिश लंबे समय तक होती रही है। इस बारिश का असर साल बोरर के संक्रमण पर पड़ा है। उनके अनुसार, लगभग 80 प्रतिशत आर्द्रता अंडे देने के लिए सबसे अनुकूल होती है।

डिंडोरी की कार्य योजना 2014-24 के अनुसार, साल बोरर की संख्या में वृद्धि मुख्य रूप से जलवायु पर निर्भर करती है। वायुमंडल की आर्द्रता यदि 55 प्रतिशत के लगभग होती है तो मादा कीड़े द्वारा अंडे नहीं दिए जाते। इसी प्रकार यदि आर्द्रता 100 प्रतिशत होती है तो भी अंडे देने की संख्या में कमी पाई जाती है। परन्तु यदि आर्द्रता 91 प्रतिशत होती है तो मादा कीड़ा 465 अंडे तक दे सकती है। जुलाई एवं अगस्त के महीने में आर्द्रता 91 प्रतिशत के आसपास बनी रही तो मादा कीड़ों द्वारा बहुत अधिक संख्या में अंडे दिए जाएंगे जो लार्वा में परिवर्तित होंगे। वर्ष 1995-96 तथा 1996-97 में लगभग सम्पूर्ण प्रदेश में अच्छी वर्षा हुई थी। 1997 में जुलाई के महीने में मंडला जिले में वर्ष 1996 की अपेक्षा अधिक आर्द्रता रही है। इन परिस्थितियों ने साल बोरर को महामारी के रूप में फैलने में मदद की। 2025

के मॉनसून में अनूपपुर, डिंडोरी और मंडला में सामान्य से क्रमशः 4.7 और 33 प्रतिशत अधिक बारिश हुई। वहीं मॉनसून के बाद इन जिलों में क्रमशः 127, 36 और 19 प्रतिशत अधिक बारिश दर्ज की गई, जिससे कीट के लिए अनुकूल परिस्थितियां बन गईं। अमरकंटक के सेवानिवृत्त सब डिवीजनल ऑफिसर (एसडीओ) ओजी गोस्वामी भी मानते हैं कि मॉनसून में जून-जुलाई के आसपास साल बोरर के कीट उड़ने लगते हैं। यदि नमी अधिक हो, धूप कम पहुंचे और जंगल बहुत घना हो तो साल बोरर की संख्या बढ़ जाती है, खासकर शुद्ध साल के जंगलों में क्योंकि कीट का पूरा जीवन-चक्र पेड़ पर ही निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि 2025 में मॉनसून सामान्य से अधिक रहा है। पोस्ट मॉनसून भी बहुत बारिश हुई है। यह कीट के फैलाव का एक कारण हो सकता है। साल बोरर को नियंत्रित करने के लिए फिलहाल एक ही तरीका चलन में है, जिसे वैज्ञानिक ट्री ट्रेप ऑपरेशन कहते हैं। इस ऑपरेशन के अंतर्गत वयस्क कीड़े पकड़ने का कार्य किया जाता है ताकि वह आगे प्रजनन न कर सके। जून-जुलाई के महीने में वर्षा शुरू होने

के बाद जब कीड़े वृक्ष से बाहर निकलते हैं, तो इनको पकड़ने के लिए साल के 60-90 सेमी गोलाई वाले वृक्षों को काटा जाता है और 2-3 मीटर लम्बे लट्टे बनाए जाते हैं। इन लट्टों के दोनों किनारों पर 1-1 फीट भाग के छाल को पीट दिया जाता है, जिससे साल की छाल में उपस्थित रस बाहर निकल आता है। साल बोरर कीड़े इस रस की ओर बड़ी शीघ्रता से आकर्षित होते हैं और यह देख जाता है कि एक किलोमीटर तक की दूरी से उड़कर साल बोरर कीड़े इन लट्टों में आकर छाल का रस चूसने लगते हैं। रस चूसकर साल बोरर मदमस्त हो जाते हैं और उड़ नहीं पाते। इस दौरान इन्हें आसानी से मार दिया जाता है। आक्रमण सामान्य है, तो 2 हेक्टेयर क्षेत्र में एक ट्रेप लगाना पर्याप्त होगा, परन्तु यदि आक्रमण अधिक है तो 2 हेक्टेयर क्षेत्र में एक से अधिक ट्रेप की आवश्यकता होती है। इस प्रचलित विधि की बड़ी खामी यह है कि इसमें बड़े पैमाने पर स्वस्थ पेड़ों को काटा जाता है। 1996-2001 की अवधि में इसका भारी विरोध हुआ था। डिंडोरी की कार्य योजना 2014-24 के अनुसार, वर्ष 1963-64 से 1977-78 के मध्य इस ऑपरेशन के दौरान 2,36,984 वृक्ष काटे गए थे। साल बोरर कीड़े रात्रि में प्रकाश के द्वारा भी आकर्षित होते हैं। 1996-1997 और 1997-1998 में डिंडोरी जिले के ग्रामीणों द्वारा प्रकाश की सहायता से काफी संख्या में कीड़े पकड़े गए थे। साल बोरर के बार-बार होने वाले प्रकोपों के बावजूद इसके प्रभावी निवारक और उपचारात्मक उपायों के रूप में अब तक कोई ठोस सफलता नहीं मिल पाई है। जैविक नियंत्रण के उपाय और रासायनिक विधि से कीट नियंत्रण के तरीके जमीन पर नहीं उतर पाए हैं। डिंडोरी में 4,000 की आबादी वाले चौरादादर गांव के भरत पडवार चेतते हैं कि अगर साल बोरर का प्रकोप इसी तरह रहा, तो आने वाले 4-5 वर्षों में साल का पूरा जंगल खत्म हो जाएगा। ओजी गोस्वामी ने अमरकंटक में साल बोरर के प्रकोप के मद्देनजर नीतिगत सुझावों का एक दस्तावेज तैयार किया है। इसमें उन्होंने कहा है कि अत्यधिक संक्रमित श्रेणी 1 के पेड़ों को काटकर तुरंत जंगल से हटाया जाए ताकि संक्रमण अधिक न फैले। कटे पेड़ों को जंगल में छोड़ने के बजाय कम से कम 5 किलोमीटर दूर निर्धारित डिस्पोजल जोन में ले जाकर नष्ट किया जाए।

पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने नई दिल्ली में एक उच्च स्तरीय वायु प्रदूषण कार्य योजना की समीक्षा की

नई दिल्ली पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने आज नई दिल्ली में एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के साथ वायु प्रदूषण कार्य योजना की समीक्षा की। श्री यादव ने सुचारू यातायात प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए, विशेष रूप से 62 भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में यातायात प्रबंधन की आवश्यकता पर बल दिया। श्री यादव ने प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की बात कही। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने बताया कि केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने ऑनलाइन सतत उत्सर्जन निगरानी प्रणाली स्थापित न करने वाली 88 इकाइयों को नोटिस जारी किए हैं। इनके खिलाफ इस महीने की 23 तारीख से कार्रवाई शुरू की जाएगी। बैठक के दौरान इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन देने, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के त्वरित विस्तार, भीड़भाड़ शुल्क, स्मार्ट पार्किंग प्रबंधन और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए एक समान वाहन पंजीकरण नीति जैसे उपायों पर भी चर्चा की गई।

महज 10 दिन में अमीरों ने उड़ा दिया 2026 का कार्बन कोटा, गरीब भुगतेंगे सजा- ऑक्सफैम

नई दिल्ली। साल 2026 शुरू हुए अभी महज 12 दिन ही हुए हैं, हालांकि ऑक्सफैम के मुताबिक दुनिया के सबसे समृद्ध एक फीसदी लोगों ने महज 10 दिनों में ही अपना सालभर का कार्बन बजट खत्म कर दिया है। मतलब कि कहीं न कहीं दुनिया के सबसे सुपर-रिच लोगों ने 2026 की शुरुआत से ही धरती पर बोझ डालना शुरू कर दिया है।

गौरतलब है कि कार्बन बजट वह सीमा है जिसके भीतर रहकर तापमान में हो रही वृद्धि को डेढ़ डिग्री सेल्सियस की सीमा के भीतर रखा जा सकता है। ऑक्सफैम द्वारा जारी इस नए विश्लेषण के मुताबिक हालात और भी ज्यादा चौंकाने वाले हैं, सबसे समृद्ध 0.1 फीसदी लोग तो 3 जनवरी तक ही अपनी पूरी कार्बन सीमा पार कर चुके थे। ऑक्सफैम ने इस दिन को 'पॉल्यूटोक्रैट डे' नाम दिया है, यानी वह दिन जब अमीरों का प्रदूषण बाकी दुनिया के हिस्से का भविष्य छीन लेता है। यह दिखाता है कि जलवायु संकट को बढ़ाने में सबसे अमीर लोगों की जिम्मेदारी असमान रूप से कहीं ज्यादा है। ऑक्सफैम की एक अन्य रिपोर्ट क्लाइमेट प्लॉन्डर-हाउ अ पावरफुल प्यू आर लॉकिंग द वर्ल्ड इंटू डिजास्टर के मुताबिक दुनिया के सबसे अमीर 0.1 फीसदी लोग एक दिन में उतना कार्बन प्रदूषण कर रहे हैं, जितनी दुनिया की गरीब आधी आबादी पूरे साल भर में करती है।

आंकड़ों पर नजर डालें तो एक औसत अमीर व्यक्ति हर दिन 800 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ₂) उत्सर्जित कर रहा है। वहीं दूसरी तरफ एक गरीब हर दिन महज दो किलोग्राम सीओ₂ उत्सर्जित करता है। इसी तरह एक औसत अरबपति अपने निवेशों के जरिए हर साल करीब 19 लाख टन कार्बन उत्सर्जित करता है, जो एक आम आदमी के उत्सर्जन से करीब 3.46 लाख गुणा अधिक है। 1990 से अब तक देखें तो दुनिया के सबसे अमीर एक फीसदी लोगों ने जितना कार्बन बजट खर्च किया है, वह धरती की आधी गरीब आबादी के मुकाबले 100 गुणा और सबसे गरीब 10 फीसदी लोगों के मुकाबले 300 गुणा अधिक है। नई रिपोर्ट में इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि दुनिया के सबसे समृद्ध एक फीसदी लोगों का महज एक साल का उत्सर्जन, सदी के अंत तक करीब 13 लाख लोगों की गर्मी से होने वाली मौतों की वजह बनेगा। इतना ही नहीं दशकों से जारी अमीरों की भारी कार्बन खपत ने कमजोर और निम्न-मध्यम आय वाले देशों को भारी आर्थिक नुकसान पहुंचाया है। ऑक्सफैम ने आगाह किया है कि अगर दुनिया को जलवायु तबाही से बचाना है, तो सबसे अमीर एक फीसदी लोगों को 2030 तक अपने उत्सर्जन में 97 प्रतिशत की कटौती करनी होगी। लेकिन विडंबना यह है कि जलवायु संकट के लिए सबसे कम जिम्मेदार लोग—कमजोर और जलवायु-संवेदनशील देशों के समुदाय, वन वास, महिलाएं और बच्चियां इसका सबसे ज्यादा खामियाजा भुगतेंगी। ऑक्सफैम की क्लाइमेट पॉलिसी लीड नाफकोटे डाबी का प्रेस विज्ञप्ति में कहना है, शोध बार-बार यही दर्शाते हैं कि सरकारों के पास उत्सर्जन घटाने और असमानता से निपटने का एक आसान स्पष्ट रास्ता है, और यह रास्ता है सबसे बड़े

प्रदूषकों को निशाने पर लेना। उनके मुताबिक अगर सरकारें सुपर-रिच के बेलगाम कार्बन उत्सर्जन पर लगाम लगाएं, तो दुनिया को जलवायु लक्ष्यों की राह पर वापस लाया जा सकता है। सुपर-रिच सिर्फ अपनी ऐशो-आराम भरी जीवनशैली से ही नहीं, बल्कि प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों में निवेश करके भी जलवायु संकट को गहरा रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, हर अरबपति का निवेश ऐसी कंपनियों में है जो औसतन सालाना करीब 19 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित कर रही हैं। इससे दुनिया और गहरे जलवायु भंवर में फंसी जा रही हैं।

ऑक्सफैम के अनुसार दुनिया के ये सबसे समृद्ध लोग और बड़ी कंपनियां सिर्फ प्रदूषण ही नहीं फैला रही, बल्कि नीति-निर्माण पर भी असमान प्रभाव डालती हैं। उदाहरण के लिए हाल ही में ब्राजील में हुई कॉप जलवायु वार्ता में फॉसिल फ्यूल कंपनियों के 1,600 लॉबिस्ट मौजूद थे, जो मेजबान देश को छोड़कर किसी भी देश के प्रतिनिधिमंडल से ज्यादा थे। डाबी कहती हैं, सुपर-रिच और बड़ी कंपनियों की अपार ताकत उन्हें नीतियों को अपने पक्ष में मोड़ने और जलवायु वार्ताओं को कमजोर करने का मौका देती है।

ऐसे में ऑक्सफैम ने सरकारों से अपील की है कि वे सुपर-रिच के उत्सर्जन पर लगाम लगाएं और अमीर प्रदूषकों से उसकी कीमत वसूलें। इसके लिए संगठन ने कुछ ठोस कदम सुझाए हैं जैसे बेहद समृद्ध लोगों की आय और संपत्ति पर कर बढ़ाए जाएं, और संयुक्त राष्ट्र के अंतरराष्ट्रीय कर सहयोग सम्मेलन की वार्ताओं में सक्रिय भूमिका निभाकर एक ज्यादा न्यायपूर्ण वैश्विक कर व्यवस्था बनाई जाए।

रिपोर्ट ने जोर दिया है कि फॉसिल फ्यूल कंपनियों के मुनाफे पर अतिरिक्त कर लगाया जाना चाहिए। ऑक्सफैम के मुताबिक, तेल, गैस और कोयले के व्यापार से जुड़ी 585 कंपनियों पर 'रिच पॉल्यूटर प्रॉफिट टैक्स' लगाने से पहले ही साल में 40,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर तक जुटाए जा सकते हैं, जो ग्लोबल साउथ में हो रहे जलवायु नुकसान के बराबर है। इसके साथ ही रिपोर्ट में प्राइवेट जेट और सुपर-यॉट जैसे लगजरी साधनों पर प्रतिबंध या भारी कर की भी मांग की गई है। आपको जानकार हैरानी होगी कि यदि बेहद अमीर व्यक्ति महज एक हफ्ते भी निजी जेट और लगजरी यॉट की ऐसी ऐशो-आराम भरी यात्रा करे तो उसका कार्बन फुटप्रिंट दुनिया के सबसे गरीब व्यक्ति के पूरे जीवन भर के कार्बन उत्सर्जन के बराबर हो जाता है। यह रिपोर्ट साफ संकेत देती है कि जलवायु संकट कोई प्राकृतिक दुर्घटना नहीं, बल्कि कुछ बेहद समृद्ध लोगों की बेलगाम जीवनशैली, निवेश और नीतिगत दबदबे का नतीजा है। जब तक दुनिया सबसे बड़े प्रदूषकों को जवाबदेह नहीं ठहराती और मुनाफे के बजाय लोगों और प्रकृति को केंद्र में रखने वाली आर्थिक व्यवस्था की ओर नहीं बढ़ती, तब तक जलवायु न्याय सिर्फ एक नारा बना रहेगा और उसकी कीमत सबसे गरीब और कमजोर तबके को चुकानी पड़ेगी।

गांव और ग्रामीण ही देश के विकास की धुरी - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी) मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारा देश बदलाव के दौर से गुजर रहा है। हर तरफ विकास की बयार है। गांव-गांव तक सरकार की योजनाओं की जानकारी और विकास कार्यक्रमों का लाभ पहुंच रहा है। गांव और ग्रामीण ही देश के विकास की धुरी हैं। इनकी मजबूती में ही देश की मजबूती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनअभियान परिषद शासन और समाज के बीच एक सेतु की भूमिका में है। सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने में जनअभियान परिषद का योगदान निःसंदेह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि सबके समन्वित प्रयासों से हम ग्रामोदय से अभ्युदय मध्यप्रदेश का लक्ष्य प्राप्त करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कंवेंशन सेंटर में ग्रामोदय से अभ्युदय मध्यप्रदेश अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा 12 से 26 जनवरी तक प्रदेश में आयोजित किये जा रहे %ग्राम विकास पखवाड़े% के %राज्यस्तरीय उन्मुखीकरण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम% का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। इस पखवाड़े में की जाने वाली गतिविधियों के बारे में परिषद द्वारा प्रदेश के 313 विकासखंडों से प्रत्येक विकासखंड से आये 2-2 युवाओं को दो दिवसीय उन्मुखीकरण एवं प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कहा कि स्वामी विवेकानंद जी की जयंती से इस ग्राम विकास पखवाड़े का आयोजन प्रदेश में नई ऊर्जा का संचार करेगा। उन्होंने कहा कि हम सबको अपनी ग्रामीण संस्कृति और भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखना है। हम सबको राष्ट्र विरोधी ताकतों से एकजुट होकर लड़ना होगा। यही राष्ट्र सेवा और समाज सेवा है। सबके सहयोग से ही हमारी भावना बलवति होगी, फलवती होगी। गांव के विकास में सरकार हर सहयोग करेगी। गांव-गांव तक विकास की बात पहुंचेगी तभी हमारा मध्यप्रदेश आत्मनिर्भर और विकसित मध्यप्रदेश बनेगा।

प्रदूषण बोर्ड की जांच में निगरानी व्यवस्था में खामियां

इंदौर । देश के सबसे स्वच्छ शहरों में शामिल इंदौर की हवा को लेकर अब गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एमपीपीसीबी) की जांच में सामने आया है कि शहर में वायु गुणवत्ता मापने की मौजूदा व्यवस्था सही तस्वीर नहीं दिखा रही थी। अब निगम को पत्र लिख के रियल टाइम मशीनों को हटा कर अन्यत्र लगाने और सही तरीके से मॉनिटरिंग करने का कहा गया है।

प्रदूषण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, इंदौर में लगे अधिकांश कंटीन्यूअस एम्बिएंट एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन (सीएएक्यूएमएस) मुख्य सड़कों और अधिक ट्रैफिक वाले इलाकों से दूर, पार्कों और हरित क्षेत्रों में लगाए गए हैं। ऐसे स्थानों पर लगे स्टेशन आम लोगों की रोजमर्रा की प्रदूषण एक्सपोजर को नहीं दर्शाते। बोर्ड ने साफ कहा है कि इससे प्रदूषण का वास्तविक और तुलनात्मक आकलन संभव नहीं हो पाता और यह केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दिशा-निर्देशों के खिलाफ है। जांच में यह भी सामने आया कि नगर निगम द्वारा इन स्टेशनों की नियमित निगरानी नहीं की जा रही थी। किसी भी स्टेशन पर नगर निगम का अधिकृत अधिकारी नियमित रूप से मौजूद नहीं पाया गया। तकनीकी समीक्षा, फिजिकल निरीक्षण और ऑपरेशनल ऑडिट भी नियमित नहीं हो रहे थे, जिससे स्टेशन से मिलने



वाला डेटा प्रभावित होता रहा। सल्फर डाइऑक्साइड जैसे गैस एनालाइजर को मौके पर सही तरीके से कैलिब्रेट नहीं किया जा सका। तकनीकी जांच में यह भी पाया गया कि पीएम 2.5 और पीएम10 मशीनों के कैलिब्रेशन में तय मानकों से बड़ा अंतर था। सैंपलिंग के दौरान फिल्टर रिबन पर अत्यधिक धूल, कट-फट और ओवरलोडिंग देखी गई। कुछ जगहों पर एक ही फिल्टर या रिबन का बार-बार इस्तेमाल किया गया, जो नियमों के खिलाफ है। सबसे गंभीर बात यह रही कि स्टेशन पर दिखाया गया डेटा और केंद्रीय सर्वर पर अपलोड किया गया डेटा कई बार अलग-अलग पाया गया। साथ ही कई मौकों पर पीएम 2.5 का स्तर पीएम10 से अधिक दर्ज हुआ, जिसे वैज्ञानिक रूप से असामान्य बताया गया है। बोर्ड ने इस पर डेटा प्रोसेसिंग में गड़बड़ी या हेरफेर की आशंका से इनकार नहीं किया।

सूर्य की रोशनी से पर्यावरण संरक्षण और मिलेट से जीने की कला सिखाई

जयपुर जयपुर में तीन दिवसीय मिलेट महोत्सव (श्रीधान्य जीवन वैलनेस प्रोग्राम) का आयोजन किया गया। इसमें हमारे पूर्वजों के पौष्टिक अनाज की संपूर्ण जानकारी, उनसे मिलने वाले फायदों और शरीर की बीमारी के अनुसार उनका उपयोग समझाया गया। देश के मिलेटमैन कहे जाने वाले और पद्मश्री से पुरस्कृत डॉ. खादर वली ने रविवार को अपने सत्र से महोत्सव का समापन किया। उन्होंने सूर्य की रोशनी से पर्यावरण संरक्षण और मिलेट से जीवन जीने की कला सिखाई। उनकी सुपुत्री डॉ. सरला कोइको ने सरल-सहज ढंग से पॉजिटिव मिलेट कोदो, कुटकी, सांवा, कंगनी और हरी कंगनी का उपयोग समझा कर इनके व्यंजन भी बनाने सिखाए। कार्यक्रम में बताया गया कि मिलेट को आहार में शामिल कर हम किस तरह तनाव मुक्त, रोग मुक्त और ऊर्जावान जीवन जी सकते हैं। साथ ही दवाइयों को जीवन से सदा के लिए अलविदा कह सकते हैं।

सूर्य नमस्कार करें, प्राणायाम करें और व्यक्तित्व के साथ चरित्र का भी करें निर्माण



भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वामी विवेकानंद जी ने अपने विचारों से राष्ट्र के युवाओं में नई ऊर्जा का संचार किया। वे एक महान चिंतक थे और केवल शरीर से बल्कि कर्म से भी युवा थे। उन्होंने कहा कि योग हमारी भारतीय परंपरा का हिस्सा है। सूर्य नमस्कार की यौगिक क्रियाएं हमारे संपूर्ण जीवन का निचोड़ हैं। यह केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि हमारे जीवन को सामान्यता से उत्कृष्टता की ओर लेकर जाने का बड़ा माध्यम है। हम रोजाना सूर्य नमस्कार में समाहित 12 योग क्रियाओं के जरिए ही अपने शरीर को निरोगी बनाकर सुखी रह सकते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी) के अवसर पर भोपाल के शासकीय सुभाष उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय सामूहिक सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।